29

प्रेम, आंसू और क्षमा

लूका 7:36-50, एक निकट दृष्टि

यीशु को दूसरों के साथ भोजन करना अच्छा लगता था। वह अपने चेलों के साथ भोजन करता था (मरकुस 14:14; लूका 22:15)। वह अपने मित्रों के साथ भोजन करता था (लूका 10:38-42; यूहन्ना 12:1, 2)। वह चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ भोजन करता था (लूका 5:29, 30)। यहां तक कि वह फरीसियों के साथ भी खाता था (लूका 11:37-54; 14:1-6)। जहां तक हम जानते हैं, मसीह ने खाने के निमन्त्रण को कभी ठुकराया नहीं था।[1]

लूका 7:36-50 यीशु को किसी फरीसी के साथ खाने के लिए पहली बार बुलाए जाने के बारे में बताता है। प्रेम और क्षमा पर यीशु के सबसे मर्मस्पर्शी संदेशों में से एक का कारण बनने वाली आश्चर्यजनक घटनाएं घटीं।

एक यादगारी विनती (आयत 36क)

कहानी शुरू होती है, ''फिर किसी फरीसी ने उस से विनती की, कि मेरे साथ भोजन कर'' (आयत 36क)। इस फरीसी का नाम शमौन था (आयतें 40, 43, 44)। मूल भाषा में ''विनती की'' में ज़ोर देने का संकेत मिलता है। शमौन यीशु को तब तक बार-बार आने के लिए कहता रहा (आयत 39), जब तक उसने उसका निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया।

शमौन मसीह को साथ खाना खाने के लिए बुलाने को इतना उतावला ज़्यों था? इस बारे में कई सुझाव दिए गए हैं।

शायद इस फरीसी को यीशु अच्छा लगता था। सभी फरीसी मसीह से घृणा नहीं करते थे (यूहन्ना 7:45-52; लूका 13:31)। साधारणतया, हम लोगों को अपने घरों में इसलिए बुलाते हैं, ज़्योंकि हमें उनकी संगति अच्छी लगती है, परन्तु अगली घटनाओं को देखने पर लगता नहीं है कि शमौन का ऐसा कोई इरादा था।

शायद उसका उद्देश्य दूसरे फरीसियों वाला ही था: शायद वह यीशु को फंसाने के चज़्कर में था या उसमें कुछ दोष ढूंढ़ रहा था, जिसका इस्तेमाल वह उस पर आरोप लगाने के लिए कर सके। हो सकता है, परन्तु वृज़ांत में ऐसा कुछ नहीं मिलता, जिससे यह संकेत मिले कि शमौन की ओर से मसीह को फंसाने के लिए जान बूझकर कोई प्रयास किया गया था।

शमौन का उद्देश्य पहले दो सुझावों के बीच का लगता है। निश्चय ही उसने सुन रखा था कि उसके साथी फरीसियों का प्रभु के बारे में ज़्या कहना है। इसके साथ ही, वह मसीह के प्रसिद्ध विचार से भी अवगत होगा। इससे कुछ समय पहले, यीशु नाईन में था, जहां लोग पुकार उठे थे, ''हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यवज़्ता उठा है'' (लूका 7:16)।[2] लगता है कि शमौन को यह प्रश्न सता रहा होगा कि ''वास्तव में, यह आदमी है कौन?''

बुलाने के और भी कई कारण सुझाए गए हैं,[3] परन्तु शमौन का उद्देश्य चाहे जो भी रहा हो, यीशु को इसका पता होगा (यूहन्ना 2:25)। इससे एक और प्रश्न खड़ा होता है कि मसीह ने ऐसा अस्पष्ट निमन्त्रण स्वीकार ज़्यों किया? पुन: कई सज़्भावनाएं मन में आती हैं।

निश्चय ही यीशु जानता था कि शमौन को पज़्का पता नहीं है कि वह कौन था और ज़्या था। इसलिए वह शमौन की सहायता के लिए उसके पास गया होगा। भोजन के समय और लोग भी वहां मौजूद होने थे (देखें लूका 7:49); इसलिए मसीह उन्हें सिखाने के लिए गया हो। इसके अलावा, यीशु को पता होगा कि भोजन के समय ज़्या होने वाला है[4]; वह उस स्त्री को, जिसने ''पार्टी खराब कर दी'' थी, उत्साहित करने के लिए गया होगा। अन्तत:, जैसा पहले ही कहा गया है, यीशु को लोगों के साथ, विशेषकर हर प्रकार के लोगों के साथ, चाहे वे उसका विरोध करने वाले ही ज़्यों न हों, खाना खाना, बातें करना और संगति करना अच्छा लगता था। उसने अपने चेलों को अपने शत्रुओं से प्रेम करने की शिक्षा दी थी (मज़ी 5:44); शायद वह ऐसे प्रेम का व्यावहारिक नमूना ही दिखा रहा था।

शमौन के घर यीशु के जाने का सही उज़र शायद ''ऊपर दिए सारे'' कारण हैं। परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि यीशु ने निमन्त्रण को *स्वीकार किया* और फरीसी के साथ खाने के लिए गया।

एक असज़्माननीय व्यक्ति (आयतें 36ख, 44-46)

आयत 36 के अन्त में कहा गया है, ''सो वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा।'' कहानी में बाद के भाग में हमें पता चलता है कि यीशु के उस घर में प्रवेश करने और उसके मेज पर बैठने के बीच में बहुत कुछ घटित हुआ (या, यूं कहें कि *नहीं* हुआ)।

उस ज़माने में सामाजिक रीतियां और परिस्थितियां ऐसी थीं कि घर आने वाले अतिथि के साथ कुछ शिष्टाचार बरतना आवश्यक था। मेज़बान पहले तो आगंतुक के स्वागत के लिए उसका चुज़्बन लेता था (उत्पज़ि 29:13; 45:15; 2 शमूएल 15:5; 19:39; मज़ी 26:49; प्रेरितों 20:37; रोमियों 16:16)। सामान्यतया, यह चुज़्बन गाल पर होता था।

फिर कोई जन पानी का बर्तन और एक तौलिया लाता था, जिससे आगंतुक अपने पांव धो ले (उत्पज़ि 18:4; न्यायियों 19:21; यूहन्ना 13:4, 5; 1 तीमुथियुस 5:10)। यह काम प्राय: सेवकों द्वारा किया जाता था। यह ढंग बिल्कुल व्यावहारिक था, ज़्योंकि लोग धूल मिट्टी भरे रास्तों पर चलने के लिए खुले जूते पहनते थे। इस संस्कार से बाहर से आने वाले को आराम मिलता था और मेज़बान अपने घर में मेहमानों के लिए साफ़ सुथरा बिस्तर

आदि रखता था।

एक तीसरा शिष्टाचार, जो सामान्य तो नहीं था, परन्तु सज़्मानित अतिथि से अज़्सर किया जाता था वह सिर और/या मुंह पर लगाने के लिए तेल या क्रीम उपलज़्ध कराना था (देखें भजन संहिता 45:7; 92:10; 104:15; 141:5; सभोपदेशक 9:8; आमोस 6:6)। मेहमान कई घण्टे धूप में चलकर आया हो, तो ऐसी कृपा उसके स्वागत को और भी ताज़गी देने वाली होती थी।

शमौन के घर में यीशु के आने पर, शिष्टाचार की इनमें से कोई बात उसके साथ नहीं की गई। बाद में उसने अपने मेज़बान से कहा, ''मैं तेरे घर में आया, परन्तु तू ने मेरे पांव धोने के लिए पानी न दिया, ... तू ने मुझे चूमा न दिया। ... तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला ...'' (आयतें 44-46)। यह इस बात का संकेत नहीं है कि दूसरे अतिथियों को भी नज़रअन्दाज किया गया था (आयत 49)। 44 से 46 आयतों में ''मुझे'' और ''मेरे'' शज़्दों का संकेत यह है कि यह तिहरा अपमान केवल मसीह का ही हुआ था।

कुछ देर के लिए, अपने आप को यीशु की जगह रखें। आपको शमौन के घर में खाने के लिए बुलाया जाता है। वास्तव में, यह निमन्त्रण बार-बार ज़िद करके दिया गया है, जिसमें तब तक आपको आने के लिए कहा जाता है, जब तक आप अपने दूसरे काम छोड़कर जाने को राजी नहीं हो जाते। परन्तु, घर पहुंचने पर आपका मेज़बान आपकी ओर ध्यान नहीं देता अर्थात आपकी उपेक्षा करता है। वह दूसरे अतिथियों का स्वागत बड़ी गर्मजोशी से, उनसे गले मिलते हुए और प्यार से चूमते हुए व यह दिखाते हुए कि पांव धोने के लिए पानी और तेल कहां रखा है, करता है। यह सब देखते हुए, आप खाना खाने का समय आने तक एक ओर खड़े, सब देखते रहते हैं। आपको बताया गया हो सकता है और नहीं भी कि आराम कहां करना है। शायद, आपको सबके बैठने तक इन्तज़ार करना होगा, और बचे हुए में से आपको मिल सकता है।

ज़्या आप कभी ऐसी जगह गए हैं, जहां आपके चारों ओर आपके विरोधी लोग हों या कम से कम ऐसे लोग हों, जो आपके साथ मित्रतापूर्वक या सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार न कर रहे हों? ज़्या आपने कभी ऐसी इच्छा की है कि आप कहीं और, कहीं भी हो सकते हैं? मुझे ऐसे बहुत से अनुभव हुए हैं, जिन्हें मैं याद नहीं करना चाहता।[5] ज़्या शमौन के घर में यीशु के मन में भी ऐसी ही भावनाएं थीं? यदि थीं, तो उसने उन्हें वहां होने के अपने उद्देश्य से उसे हटने के लिए रुकावट नहीं बनने दिया।

एक रोने वाली स्त्री (आयतें 36-39, 44-46)

कहानी में आगे बढ़ने से पहले, कुछ व्याज़्याएं देनी आवश्यक हैं। इस बात का ज़्या अर्थ है कि यीशु ''भोजन करने बैठा'' (आयत 36)? एक बिन बुलाई मेहमान भोज में इतनी आसानी से कैसे आ गई थी (आयत 37)? वह कब आई, उसने अपने आप को यीशु के सिर पर तेल लगाने के बजाय उसके पांवों में लगाते ज़्यों पाया (आयत 38)? हमें दृश्य को बनाना पड़ेगा।

पहले, मेज़ के आस-पास बैठे मेहमानों को अपने मन में देखें। भोजन करने की सामान्य स्थिति बाईं कोहनी के सहारे के लिए, मेज बाईं ओर होना था। ज़्योंकि इससे दाएं हाथ को खाना उठाने में आसानी होती थी। मुंह खाने की ओर, और पांव आगे की ओर होने थे। दो अन्य बातों का उल्लेख करना आवश्यक है: पांव नंगे थे, ज़्योंकि जूते तो दरवाज़े पर उतार दिए गए थे, और वहां केवल पुरुष ही थे। ज़्योंकि स्त्रियों को दावतों में केवल भोजन परोसने या सेवा करने की ही अनुमति होती थी।[6]

फिर, एक पूर्व के लोगों के भोजन करने की सामान्य स्थिति को मन में उतारें। लोग बातें करते हुए हंस रहे थे। सेवक कटोरों में डालते, चीज़ें लाते हुए अन्दर-बाहर आ जा रहे थे। कमरे या आंगन के बाहर जहां दावत तैयार की गई थी, उत्सुक लोगों की भीड़ जुटी होगी। उस समय पूर्व के लोगों में आज के शहरी जीवन की तरह गोपनीयता नहीं होती थी।[7] किसी दावत के समय लोगों की भीड़ इकट्ठा होना आम बात थी, विशेषकर तब जब यह पता हो कि कोई प्रसिद्ध व्यज़्ति वहां आया है। इसलिए बिन बुलाई पापिन स्त्री का अचानक शमौन की दावत में दिखाई देना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी।

यह सब ध्यान में रखते हुए, आइए बाइबल में वापस आते हैं: ''और देखो, उस नगर की एक पापिन स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई'' (आयत 37)।

स्त्री को ''पापिन स्त्री'' कहा गया है। बाद में यीशु ने कहा कि उसके पाप ''बहुत थे'' (आयत 47)। उसके जो भी पाप थे, लोगों को पता थे; ज़्योंकि वह एक बदनाम स्त्री थी (आयत 39)। अधिकतर टीकाकारों का निष्कर्ष है कि आयत 37 में ''पापी'' शज़्द ''वेश्या'' का पर्यायवाची है।[8]

कहानी से यह स्पष्ट है कि यह बदनाम पापिन जानती थी कि यीशु कौन है और यह कि उसने उसका जीवन बदल दिया है।[9] दोनों ही शायद पहले कभी एक दूसरे से मिले नहीं थे,[10] परन्तु उसे यीशु को सुनने के कई अवसर मिले होंगे।[11] उसने पापियों और निकाले हुओं के प्रति उसका प्रेम देखा था (देखें मज़ी 11:5, 19)। उसने उसके स्नेहपूर्ण निमन्त्रण को भी सुना होगा:

> हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुज़्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीज़ो। ज़्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। ज़्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है (मज़ी 11:28-30)।

यीशु से भेंट की उसकी तीव्र इच्छा पुरुषों में से निकलते हुए साहस के साथ आकर, उसके आंसू बहना (आयतें 37, 38)-जो इस स्त्री के मन की जबर्दस्त भावनाओं का प्रमाण हैं। मसीह को जानने से पहले की उसकी निराशा को समझने का प्रयास करें: हर नए दिन का खतरा, दूसरों के साथ उसकी विमुखता, अपने आप से घृणा का कारण थी। संदेह की जगह विश्वास ने (आयत 50) और सांसारिक शोक की जगह ईश्वरीय शोक (आयत

38) ने ले ली थी (2 कुरिन्थियों 7:10)। अब उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया था! उसका जीवन फिर वैसा नहीं होना था!

उसमें स्पष्टतया एक बात की कमी थी और वह थी कि कृतज्ञता व्यज़्त करने का अवसर उसके पास नहीं था। जब उसे पता चला कि यीशु उस इलाके में आया है, तो वह इत्र की एक शीशी लेकर फुर्ती से शमौन के घर चली आई।

इस फरीसी के घर पहुंचकर उसके लिए भीड़ में से रास्ता बनाते हुए, भोज के शोर में यीशु को ढूंढ़ना आसान नहीं था। अपने उद्धारकर्ज़ा के पास खड़े होने पर वह अपने ऊपर काबू नहीं रख पाई और उसकी आंखों से आंसुओं की जैसे झड़ी लग गई।

उसके आंसू यीशु के मिट्टी से भरे पांवों पर गिरने से धूल में मिल गए होंगे। उसने अपने बाल खोले और अपनी चोटियों से मिट्टी के उन धज़्बों को पोंछने लगी। एक जवान यहूदी महिला के लिए सार्वजनिक तौर पर अपने बाल खुले छोड़ना अपमान की बात थी,[12] परन्तु लोकलाज को भूलकर वह यीशु के पांव को अपने बालों से साफ़ करने लगी।

फिर वह उसके पांव चूमने लगी। यह पढ़कर कि उसने प्रभु के पांव को चूमा, किसी थके हुए राजकुमार के क्रीम आदि लगे मुलायम पांव न समझें। इस थके हुए प्रचारक के खुरदरे, कठोर और फटे हुए पांवों पर विचार करें, जो हर जगह चलकर ही जाता था–इस अवसर पर भी उसके पांव, गलीली पगडंडियों की धूल और मिट्टी से भरे हुए थे। आयत 45 के अनुसार, वह उन गन्दे–मन्दे पांवों को बार–बार चूमती रही। अन्त में, उसने अपनी शीशी उठाकर, उसे खोला,[13] और तेल मिला इत्र उसके पांवों पर डालने लगी।

इस घटना का शमौन की दावत पर पड़ा असर समझना कठिन नहीं है। याद रखें कि फरीसी लोग सार्वजनिक तौर पर स्त्रियों से कोई बात नहीं करते थे। इस समाज में इस स्त्री के बदनाम होने को याद रखें। इस स्त्री के रोने के अपरिचित व्यवहार में, साफ़ करना और उण्डेलना जोड़ लें–अपने बालों को नीचे गिरने देने के उसके लज्जाजनक व्यवहार का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं। कोई संदेह नहीं कि वहां सन्नाटा छा गया था और सबकी नज़र उस स्त्री और यीशु पर लगी हुई थी।

इस परिस्थिति की बातों से मसीह पर ज़्या असर हुआ? ज़्या उसने स्त्री को अपने पांवों पर आंसू टपकने का अहसास होने से पहले देख लिया था? कृतज्ञता की उसकी अत्यधिक और अपरज़्परागत अभिव्यज़्तियों पर उसकी तुरन्त प्रतिक्रिया ज़्या थी?

हम मसीह की तुरन्त प्रतिक्रिया के बारे में तो नहीं जान सकते, परन्तु शमौन पर हुए असर के बारे में हमें ज़रूर बताया गया है। यह फरीसी अपने घर में होने वाली उस घटना से जिसे असंगत प्रदर्शन माना था, घबरा गया होगा–परन्तु वह कुछ सन्तुष्ट भी हुआ था। यदि उसके मन में कोई प्रश्न था कि यीशु कैसा व्यज़्ति है, तो उन सब प्रश्नों का उज़र मिल गया था। वह ''अपने मन में सोचने लगा, यदि यह भविष्यवज़्ता होता तो जान जाता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? ज़्योंकि वह तो पापिनी है'' (आयत 39)।

जहां तक शमौन की बात है, तथ्य केवल दो ही सज़्भावित निष्कर्षों की अनुमति देते

थे: या तो यीशु को पता नहीं था कि वह औरत कैसी थी और इसलिए वह कोई नबी नहीं था,[14] या वह जानता तो था परन्तु उसने इस पर ध्यान नहीं दिया। दूसरे मामले में वह एक अच्छा आदमी नहीं होगा।[15] जो बात शमौन को समझ नहीं आई, वह यह है कि यीशु जानता *था* कि वह स्त्री कौन थी और उसका चरित्र कैसा था। वह यह भी जानता था कि शमौन कौन और ज़्या था–औरतों और वहां उपस्थित सब लोगों का उसे पता था।

एक सरल सी कहानी (आयतें 40-50)

अपने मेज़बान के विचारों को जानते हुए, ''यीशु ने उसके उज़र में कहा कि हे शमौन मुझे तुझ से कुछ कहना है'' (आयत 40क)। इस फरीसी की नज़र में, नाटक खत्म हो चुका था, पहेली हल हो चुकी थी। शमौन की आवाज़ में यह उज़र देते हुए कि ''हे गुरु कह''[16] (आयत 40ख) विडज़्बना सुनाई देती है।

फिर यीशु ने एक सरल सी दो वाज़्यों की अतिरिज़्त कहानी बताई। इसमें कम से कम योजना के साथ, तीन पात्र हैं: ''किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पांच सौ, और दूसरा पचास दीनार धारता था। जब उनके पास पटाने को कुछ न रहा, तो उस ने दोनों को क्षमा कर दिया'' (आयतें 41, 42क)। दीनार एक आम मजदूर की एक दिन की मजदूरी होती थी (देखें मज़ी 20:2)। इस प्रकार एक देनदार ने एक साहूकार की लगभग दो महीने की मजदूरी देनी थी, जबकि दूसरा लगभग दो साल की कमाई का देनदार था![17]

''महाजन'' शज़्द पढ़कर आप यह न सोचने लगें कि यह आपका कोई पड़ोसी है (जो, मुझे आशा है कि थोड़ा बहुत मित्रतापूर्वक होगा), बल्कि ऐसे व्यज़्ति का ध्यान करें, जो अज़्सर पैसे से प्यार करता, कठोर मन और खूंखार चेहरे वाला: जो निर्धनों को अपना शिकार बनाता, मन-मर्जी से ज़्याज की दर तय करता और जो रुपया समय पर लौटा नहीं पाते, उन पर बिल्कुल दया नहीं करता।

मसीह ने कहानी के बाद यह पूछा, ''सो उन [देनदारों] में से कौन उस [साहूकार] से अधिक प्रेम रखेगा?'' (आयत 42ख)।[18] उस समय के और आज के अधिकतर साहूकार फुफकारते हुए यही कहेंगे, ''मैं प्यार व्यार को नहीं जानता। मुझे तो *पैसे* चाहिए!''

कर्ज न चुका पाना हमेशा ही गज़्भीर बात रही है।[19] मज़ी 18:23-35 कर्ज न चुका पाने के कारण जेल में डाले जाने और प्रताड़ित किए जाने वाले आदमियों के बारे में बताता है। इसलिए यीशु की सरल सी कहानी ने एक अप्रत्याशित मोड़ ले लिया, जब उसने कहा कि साहूकार ने दोनों देनदारों को क्षमा कर दिया। साहूकार पैसे के लिए लोगों की हड्डी-पसली तुड़वाने के लिए जाने जाते हैं, परन्तु वे यह कभी नहीं कहते, ''घबराने की आवश्यकता नहीं है। मेरे पैसों की चिन्ता न करो!'' परन्तु मसीह के दृष्टांत में साहूकार ने ऐसा ही किया।[20]

फिर यीशु ने शमौन की ओर मुड़कर पूछा, ''सो उन [क्षमा किए गए देनदारों] में से कौन उस [क्षमा करने वाले साहूकार] से अधिक प्रेम रखेगा?'' (आयत 42ख)। फरीसी सज़्भवतया बोर हो चुका था। उसके दिमाग में यह कहानी मूर्खतापूर्ण और प्रश्न बहुत ही

साधारण था। उसके उज़र ''मेरी समझ में वह, जिस का उस ने अधिक छोड़ दिया'' (आयत 43क) में कहानी का सार था।

यीशु ने उससे कहा, ''तू ने ठीक विचार किया है'' (आयत 43ख)। ''विचार किया'' शज़्दों को रेखांकित कर लें। शमौन ने केवल उज़र ही नहीं दिया था; बल्कि उसने निर्णय भी दिया था–अपने आप पर निर्णय। अपने शज़्दों में वह दोषी ठहरा।

उस स्त्री की ओर मुड़ते हुए, मसीह ने फरीसी से कहा, ''ज़्या तू इस स्त्री को देखता है?'' (आयत 44क)। मैं शमौन के विचार करने की कल्पना कर सकता हूं, ''कैसा बेतुका प्रश्न है! मैं उसे कैसे नहीं देख सकता? उसने मेरी पार्टी खराब कर दी और मुझे परेशान कर दिया है! मैं तो यदि यीशु की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा न कर रहा होता तो अब तक उठाकर उसे बाहर फैंक देता। बेशक मैं उसे देख सकता हूं!'' परन्तु वास्तव में उसने उसे नहीं देखा था, या देखा था? उसकी आंखें उससे जो वह पहले होती *थी,* इतनी भरी हुई थीं कि वह देख ही नहीं पाया कि वह अब ज़्या *थी*। कवि टैनिसन ने ये दुखद शज़्द लिखे हैं: ''संसार को कभी विश्वास नहीं होगा कि व्यज़्ति पश्चाज़ाप कर रहा है।''[21]

उस स्त्री की ओर देखते, परन्तु शमौन से बात करते हुए, यीशु ने आगे कहा:

> मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धोने के लिए पानी न दिया, पर इस ने मेरे पांव आंसुओं से भिगोए, और अपने बालों से पोंछा! तू ने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूं तब से इस ने मेरे पांवों का चूमना न छोड़ा। तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला; पर इस ने मेरे पांवों पर इत्र मला है (आयतें 44ख–46)।

फिर यीशु ने अपनी कहानी की प्रासंगिकता बताई: ''इसलिए मैं तुझ से कहता हूं; कि इस के पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, ज़्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर जिस का थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है'' (आयत 47)।

41 और 42 आयतों के दृष्टांत को फिर से देखें। बर्टन कॉफ़मैन[22] ने यह प्रासंगिकता सुझाई है:

> महाजन = यीशु मसीह हमारा प्रभु।
> 500 दीनार का देनदार = पापिन स्त्री।
> 50 दीनार का देनदार = फरीसी।
> दोनों ही लौटा नहीं सकते थे = यह तथ्य कि कोई मनुष्य अपने छोटे से छोटे पापों का प्रायश्चित नहीं कर सकता।
> उसका उदारता से दोनों को क्षमा कर देना = सबके लिए क्षमा का साधन उपलज़्ध कराने की परमेश्वर की कृपा, जिसे कमाया नहीं जा सकता।

किसी दृष्टांत की छोटी से छोटी बातों के महत्व को ढूंढ़ने में सावधानी बरतनी आवश्यक है। (इस मामले में, उदाहरण के लिए, प्रभु में एक घिनौने साहूकार के गुण नहीं

हैं।)[23] तो भी सुझाई गई समानान्तर तुलनाएं दिलचस्प हैं।

यदि कॉफ़मैन की प्रासंगिकता सही है, तो *शमौन के अनुमान में* दोनों कर्ज़दारों के कर्ज़ में 450 दीनार का अन्तर था। इस फरीसी ने निश्चय ही अपने आप को उस पापिन स्त्री से सौ गुणा, या हज़ार गुणा नहीं तो दस गुणा तो अवश्य बेहतर माना होगा। ज़्या वह सचमुच उससे बेहतर था? वह स्त्री शरीर के पापों की दोषी थी, जबकि फरीसी तो आत्मा के पापों का दोषी था। स्त्री भूल के पाप की दोषी थी, जबकि वह चूक के पाप का दोषी था। स्त्री का सज़्भवतया एक पाप था, जबकि फरीसी में कई पाप थे: वह घमण्ड, स्वार्थ, दज़्भ, पूर्वधारणा, आत्मिक अन्धेपन और कपट का दोषी था।

निश्चय ही दृष्टांत में दी गई निश्चित राशि का कोई महत्व नहीं है। महत्व इस बात का है कि दोनों देनदार ''लौटाने में असमर्थ'' थे (आयत 42)। हम सब पापी हैं (रोमियों 3:23), और हम में से कोई भी अपने पाप का कर्ज़ चुकाने के लिए इतने भले काम नहीं कर सकता (रोमियों 6:23क)। हम में से हर कोई उसके सामने, जिसने हमें इतना कुछ दिया है, खाली हाथ खड़ा है।

हमें ज़्या आशा है? हमारी एकमात्र आशा प्रभु के अनुग्रह में है। साधारणतया, साहूकार दयालु नहीं होते-परन्तु परमेश्वर दयालु है। जैसे पौलुस ने कहा है, ''अनुग्रह, और दया और शान्ति'' ''परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से'' होती है (1 तीमुथियुस 1:2; 2 तीमुथियुस 1:2)।

''इस दृष्टांत में व्यज़्ति के जीवन में पाप की *मात्रा* की नहीं, बल्कि उसके मन में उसके पाप की *जानकारी* की ओर भी ध्यान दिलाया गया है।''[24] स्त्री अपने पाप की बुराई को बड़ी अच्छी तरह जानती थी। इसका पता उसके आंसुओं से चलता था। मसीह के लिए उसका प्रेम उमड़ पड़ा। इसके विपरीत अपने निजी पाप से बिल्कुल अनजान शमौन को अपने पापी होने का कोई अहसास न हुआ, न ही उसने यीशु के प्रति अपने प्रेम को व्यज़्त करने की आवश्यकता महसूस की। किसी ने कहा है कि ''सबसे बड़ा पाप अपने पाप को न जानना है।''[25]

यीशु के मेज़बान ने उसके आरोपों का उज़र कैसे दिया? यह फरीसी शायद लाजवाब हो गया था। अन्त में, उसकी प्रतिक्रिया के बारे में कुछ नहीं मिलता।

फिर मसीह ने उस स्त्री से पहली बार सीधे बात की: ''तेरे पाप क्षमा हुए'' (आयत 48)। उसने यह नहीं कहा, ''तेरे पाप क्षमा होते हैं,'' बल्कि यह कहा कि ''तेरे पाप क्षमा *हुए*। '' जैसा कि पहले ही सुझाव दिया गया है, उसके पाप क्षमा हो चुके थे, परन्तु यीशु ने उसे उस क्षमा का आश्वासन दिया। द जरूसलेम बाइबल में यीशु को यह कहते हुए दिखाया गया है, ''... उसके पाप, उसके बहुत से पाप क्षमा किए गए होंगे, वरना वह इतना प्रेम न दिखाती'' (आयत 47)।

क्षमा पाने के लिए प्रेम एक महत्वपूर्ण भाग है (यूहन्ना 14:15; 1 यूहन्ना 5:3), परन्तु इस कहानी में इस बात पर ज़ोर है कि क्षमा पाने का धन्यवाद प्रेम *उत्पन्न* करेगा: जिसे मालूम है कि उसे क्षमा किया जा रहा है, वह अधिक प्रेम करेगा, ''पर जिस का थोड़ा क्षमा

हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है'' (लूका 7:47ख)।

यीशु के उस स्त्री को यह बताने पर कि उसके पाप क्षमा हो गए हैं, दूसरे अतिथि चकित रह गए। वे बुड़बुड़ाने लगे,[26] ''यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?'' (आयत 49ख)। उनके दिमाग में, पाप क्षमा करने का अधिकार केवल परमेश्वर के पास ही था।[27]

दूसरों से ध्यान हटाते हुए, यीशु ने उस स्त्री से कहा, ''तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा'' (आयत 50क)। उसे विश्वास यीशु को देखने और सुनने से आया होगा (रोमियों 10:17)। अब वह विश्वास व्यज़्त किया गया था। उसने गलतियों 5:6 का सिद्धान्त दिखाया: ''प्रेम के द्वारा व्यज़्त किया गया विश्वास काम आता है'' (NIV)।

फिर यीशु ने उस स्त्री को ''कुशल से चली'' जाने को कहा (लूका 7:50ख)। मूलत: वह कह रहा था, ''शान्ति *में* जा।''[28] पहले उसके जीवन में मन की शान्ति नहीं थी, परन्तु अब उसे एक नई शुरुआत मिली थी (2 कुरिन्थियों 5:17; रोमियों 5:1)।

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मसीह ने उस स्त्री के पापों को छिपाने की कोशिश नहीं की। उसने उसके पाप ''बहुत'' बताए (लूका 7:47)। उसके पापों को नकारने के बजाय उसने उसे पाप करना छोड़ने के लिए प्रेरित किया। बाद में एक अवसर पर, जब यीशु को एक और पापिन स्त्री मिली, तो उसे अलविदा कहते हुए, उसने कहा था, ''फिर पाप न करना'' (यूहन्ना 8:11ख)। उस अवसर पर भी यही ताड़ना की गई थी।

प्रेम पर सबक

ज़्या यीशु की डांट से शमौन पर कोई असर हुआ? ज़्या वह स्त्री उसके बाद भज़्तिपूर्ण जीवन बिताने लगी? उज़्मीद तो यही है, परन्तु बाइबल इस बारे में कुछ नहीं बताती। न तो बाइबल हमारी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए लिखी गई है और न यह कहानी इसके मूल पात्रों को दोषी ठहराने या उनकी सराहना करने के लिए लिखी गई। बल्कि यह हम में से हर एक के अपने-अपने मनों तथा जीवनों की जांच करने के लिए लिखी गई है। आइए हम सब अपने आप से पूछें:

(1) *ज़्या मैं अपने पाप की भयानकता से अवगत हूं?* शमौन सन्तुष्ट होने के बोझ से पीड़ित था। मुझे गलत न समझें: सन्तुष्टि की इच्छा करना आवश्यक है, परन्तु धार्मिकता के लिए यह कमज़ोर विकल्प है। अपने पाप को मानने को तैयार किसी पापी के मन तक पहुंचने के बजाय किसी सन्तुष्ट पापी के मन तक पहुंचना अधिक कठिन है। आइए हम सब कहें, ''मेरा कर्ज़ बहुत है, हे प्रभु!''

(2) *ज़्या मैं अपने पापों की क्षमा पाने के आश्चर्य से अवगत हूं?* इस सप्ताह के बाइबल पाठ में, यीशु ने कई अद्भुत काम किए हैं। उसने राजा के कर्मचारी के सेवक को चंगा किया; उसने मुर्दे को जिलाया; उसने कई आश्चर्यकर्म किए-परन्तु सबसे अद्भुत बात जो उसने की, वह एक निर्धन स्त्री को क्षमा की शान्ति पाने में सहायता करना था।

मैंने पहले ही सुझाव दिया है कि दो देनदारों का दृष्टांत वास्तविकता से पूरा-पूरा मेल

नहीं खाता है। एक और उदाहरण है: कोई साहूकार इतना ही *कह* सकता है, ''कर्ज़ क्षमा कर दिया'' और नुकसान को उठा ले। परमेश्वर यह नहीं कर सकता था। बल्कि, हमारे पाप का कर्ज़ *चुकाना* आवश्यक था, जो उसने क्रूस पर अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा चुकाया (यूहन्ना 3:16; 2 कुरिन्थियों 5:21; कुलुस्सियों 2:14)! हम सब को कहना चाहिए, ''परमेश्वर का उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो!'' (2 कुरिन्थियों 9:15)।

(3) *अधिक क्षमा पाकर, ज़्या मैं अधिक प्रेम करता हूं?* यदि क्रूस की कहानी आम बात हो गई है, तो हमारे मन उस खा जाने वाली पीड़ा से कभी नहीं मरेंगे। हमें यह समझना होगा कि यीशु ने हम से प्रेम किया (रोमियों 8:37) और आज भी हम से प्रेम करता है (प्रकाशितवाज़्य 1:5)। उसके लिए हमारा मोह हर रोज नया होना चाहिए। हम सबको कहना चाहिए कि ''हे प्रभु, मेरे ठण्डे मन को गर्म कर दे!''

(4) *ज़्या मैंने अपना प्रेम व्यज़्त किया है?* उस स्त्री का निर्लज्जतापूर्ण धन्यवाद शमौन के घर आए कई लोगों को रास नहीं आया होगा। कई लोग उसके पागलपन से अवश्य हैरान हुए होंगे। परन्तु सच्चा प्रेम यह नहीं देखता कि लोग ज़्या कहते हैं। यह तो लोकलाज को दूर करके ही व्यज़्त किया जाता है। आइए हम सब मिलकर कहें, ''हे प्रभु, मेरी सहायता कर कि मैं अपना प्रेम *व्यज़्त कर* सकूं!''

सारांश

इस प्रवचन के आरज़्भ में मैंने ध्यान दिलाया था कि जहां तक हम जानते हैं, यीशु ने खाने के निमन्त्रण को कभी अस्वीकार नहीं किया था। यह मुझे प्रकाशितवाज़्य 3:20 में मसीह के अद्‌भुत निमन्त्रण का ध्यान दिलाता है: ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शज़्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।'' यीशु आपके साथ भोजन करना चाहता है, परन्तु पहले आपको उसे जीवन में निमन्त्रण देना होगा।[29]

यदि आपने यीशु को यह निमन्त्रण कभी नहीं दिया है, तो आपके विश्वास को प्रेम से काम करने की आवश्यकता है (देखें गलतियों 5:6)। उसकी इच्छा को मानकर अपने प्रेम और विश्वास को दिखाएं (यूहन्ना 14:15; मज़ी 7:21)। अपने पापों से मन फिराएं (लूका 13:3); परमेश्वर ''टूटे और पिसे हुए मन'' चाहता है (भजन संहिता 51:17)। प्रभु में अपने विश्वास का अंगीकार करके अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा (पानी में गाड़े जाकर) लें (प्रेरितों 2:38; 8:37)।

यदि, एक अविश्वासी मसीही के रूप में, आपने अपने जीवन से मसीह को बाहर निकाल दिया है, तो आप मन फिराकर, अंगीकार करके और प्रार्थना के द्वारा अपने जीवन में उसे फिर निमन्त्रण दे सकते हैं (1 यूहन्ना 1:9; प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)। ''इसलिए सरगर्म हो और मन फिरा'' (प्रकाशितवाज़्य 3:19ख)।

उस सब के लिए जो मसीह ने आपके लिए किया है, यदि आपने अभी तक धन्यवाद

नहीं किया है तो अभी करें! (देखें 2 कुरिन्थियों 6:2.)

टिप्पणियां

[1]यह प्रचार करते समय, मैं हंसाने के लिए यह भी जोड़ देता हूं: ''इस बात में, मेरी पत्नी यीशु के जैसी है।'' [2]शमौन द्वारा ''भविष्यवक्ता'' शब्द के इस्तेमाल से (लूका 7:39) यह संकेत मिल सकता है कि उसने नाईन में प्रयुक्त शब्द सुने थे। [3]बार्कले ने सुझाव दिया है कि शमौन ''प्रतिष्ठित लोगों को इकट्ठा करने वाला'' था (विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ लूक,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ [फिलाडेल्फ़िया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975], 94)। [4]यीशु ने देह में होने के समय कुछ ईश्वरीय गुणों को त्यागा (फिलिप्पियों 2:6, 7; देखें मरकुस 13:32)। परन्तु वह अभी भी जान सकता था कि किस के मन में क्या है (यूहन्ना 2:25), और दूसरों के बारे में कुछ अलौकिक ज्ञान रखता था (यूहन्ना 1:48; 4:17, 18)। कुछ हद तक, वह भविष्य को देख सकता था (यूहन्ना 6:71; मरकुस 8:31)। उसने पहले से देख लिया *होगा* कि वह स्त्री भोज में शामिल होगी। [5]यदि आपके साथ कोई ऐसा ही कुछ हुआ हो, तो आप यह ध्यान रखकर कि इससे किसी को घबराहट न हो, कुछ विस्तार से बता सकते हैं। [6]खुश करने के सम्बन्ध में, देखें मत्ती 14:6. [7]अमेरिका में भी, कुछ बूढ़े लोगों को याद है कि गर्मियों के समयों में, घरों के दरवाज़े और खिड़कियां (बिना शीशों वाली), खुली हवा आने के लिए बन्द नहीं किए जाते थे। शायद तब घरों में (बाहरी लोग) आराम से आ जा सकते थे। [8]हम सब पापी हैं (रोमियों 3:23), परन्तु इस स्त्री के पाप सामान्य नहीं लगते, जिससे हम में से अधिकतर लोग पीड़ित हैं। उसके पाप ऐसे थे कि उनके कारण वह बदनाम थी। [9]दो देनदारों के यीशु के दृष्टांत से यह शिक्षा मिलती है कि जिसे अधिक *क्षमा किया जाता* है, वह अधिक *प्रेम करता* है (लूका 7:47)। क्योंकि उस स्त्री ने कमरे में प्रवेश करने के समय से ही यीशु के लिए अपना प्रेम व्यक्त किया, अवश्य ही उसे कमरे में प्रवेश करने से पहले क्षमा किया गया होगा। [10]लूका 7:48, 50 पढ़ने से तो मुझे यही लगता है।

[11]उसके संक्षिप्त अवसर लूका 7:37 के ''नगर'' की स्थिति पर निर्भर होंगे, जिसमें विस्तार से नहीं बताया गया। उसके यीशु से मिलने या उसे सुनने के बारे में दिए गए उदाहरण इस सप्ताह के बाइबल पाठ से लिए गए हैं। [12]एक यहूदी लड़की अपने विवाह के दिन से बाल बांधती और फिर कभी-कभी खुले बाल लेकर लोगों में नहीं आती थी। [13]ऐसी शीशी खोलने का सामान्य ढंग उसका ढक्कन तोड़ना था। [14]नबी को मिलने वाला एक दान आत्मा की परख करने वाला होगा (देखें 1 राजा 14:1-6)। विशेषकर यह *उस* नबी, अर्थात मसीहा के लिए सत्य होना था (यशायाह 11:2-4)। [15]रब्बियों (परमेश्वर की प्रेरणा रहित) की परम्पराओं के अनुसार, किसी पापिन स्त्री को छूने से व्यक्ति औपचारिक रूप में अशुद्ध हो जाता था। [16]''गुरु'' यूनानी का मूल अनुवाद है। यह एक सम्माननीय पद है, जो शमौन ने यीशु के लिए इस्तेमाल किया-सम्भवतया व्यंग्यात्मक ढंग से बोला गया, क्योंकि इस फरीसी ने फैसला कर लिया था कि मसीह परमेश्वर का प्रवक्ता (अर्थात भविष्यवक्ता) *नहीं* है। [17]कमैन्ट्रियों में दीनार ''लगभग 17 सेंट'' (1 डॉलर = 100 सेंट) बताया जाता है, परन्तु यह अनुमान कई वर्ष पहले मिलने वाली मजदूरी के आधार पर होगा! पचास और पांच सौ दीनार को अपने यहां मिलने वाली मजदूरी के हिसाब से बदल लें। [18]उम्र गुरु के रूप में, यीशु अक्सर अपने चेलों को सीधा बताने के बजाय उनसे अपनी कहानी की शिक्षा के बारे में पूछता था। इससे विचार करने का समय मिल जाता था, जो सीखने की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण है। [19]साहूकारों पर मेरी यह टिप्पणियां बाइबल के समय में और उन निर्दयी साहूकारों को ध्यान में रखकर की गई हैं, जो हमारे देश के कुछ भागों में काम करते थे। निश्चय ही आप अपने इलाके की परिस्थिति से परिचित होंगे। और उसी के अनुसार बता सकते हैं। (हो सकता है कि आप वहां रहते हों, जहां लोग साहूकारों से उधार लेते रहते हैं।) आवश्यक हो तो आप अपने सुनने वालों को ऐसे साहूकारों से, जिनकी मैंने बात की

है, सज़्बन्ध रखने के विरुद्ध चेतावनी दे सकते हैं। [20]अपने दृष्टांतों में यीशु अज़्सर वही बात करता था, जो साधारणतया वास्तविक होती थी। फिर भी कभी-कभी उसके उदाहरण नियम न होकर अपवाद होते थे (देखें मज़ी 20:12)।

[21]एल्फ्रेड, लॉर्ड टैनिसन, *गिरेन्ट एण्ड एनिड;* डज़्ल्यू. एमरी बार्नस, *द फॉरगिवनेस ऑफ़ जीज़स क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: मैकमिलन कं., 1936), 53 में उद्धृत। [22]जेज़्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैन्ट्री ऑन लूक* (ऑस्टिन, टैज़्सस: फर्म फाउंडेशन पज़्लिशिंग हाउस, 1975), 147 से लिया गया। एक और असमानान्तर बात यह है कि इस दृष्टांत को यह सिखाने के लिए नहीं लेना चाहिए कि शमौन (पचास दीनार का देनदार?) को क्षमा मिल गई थी। [24]वारेड डज़्ल्यू वियर्सबे, *द बाइबल एज़्सपोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विज़्टर बुज़्स, 1989), 198. [25]विलियम बार्कले, *द गॉस्पल ऑफ़ लूक,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज [फिलाडेल्फ़िया: वेस्ट मिनिस्टर प्रैस, 1975], 95)। [26]बाइबल स्पष्ट नहीं बताती कि उन्होंने केवल मन में ही विचार किया कि एक दूसरे के कानों में बातें करने लगें। [27]एक बार फिर, यीशु परमेश्वर के बराबर होने का दावा कर रहा था (देखें मरकुस 2:5-12)। [28]यूनानी उपसर्ग जिसका अनुवाद आयत 50 में ''से'' हुआ है, *eis* है जिसका मूल अर्थ ''into'' है। [29]जहां हम रहते हैं, वहां इस वाज़्यांश का इस्तेमाल इस प्रकार होता है ''पहले, आप को स्वागत की दरी बिछानी होगी।''